

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीदूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565—224600, 224900

ई—मेल : jstsdgh01565@gmail.com

हृदय रोग की सबसे बड़ी दवा है संयम — आचार्य महाप्रज्ञ

—अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक) —

श्रीदूँगरगढ़ 2 फरवरी : — अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में प्रवचन करते हुए कहा कि आज स्वास्थ्य की समस्या बहुत जटिल हो गई है। हृदय रोग से छोटी उम्र में ही लोग मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं। विशेषज्ञ हृदय रोगियों की संख्या कुछ ही वर्षों में 10 करोड़ तक पहुंचने की संभावना जता रहे हैं। इस जटिल समस्या का सबसे बड़ा कारण है अभिलाषा, आकांक्षा। जब तीव्र अभिलाषा पैदा होती है तो मस्तिष्क के हृदय में तनाव पैदा होता है और हृदय रोग आदि बड़ी बीमारियों का उदभव हो जाता है। हमारे दो हृदय हैं। एक रक्त का शोधन करता है दूसरा मस्तिष्क में होता है। जब मस्तिष्क के हृदय पर असर होता है, तनाव बढ़ता है तो स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिलता बढ़ जाती है।

‘आमंत्रण आरोग्य को’ पुस्तक के लेखक आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत आन्दोलन के उद्घोष “संयमः खलु जीवनम्” का उल्लेख करते हुए कहा कि हृदय रोग की सबसे बड़ी दवा संयम है। अभिलाषा, आकांक्षा और इच्छा का संयम करने पर स्वस्थता को प्राप्त कर सकते हैं। आचार्यश्री ने एक केन्द्रीय मंत्री द्वारा अन्न की कमी को दूर करने के लिए सप्ताह में एक दिन उपवास करने की सलाह दिये जाने की खबरों का हवाला देते हुए कहा कि उपवास रखें और दूसरे दिन उसकी कसर निकाल दें तो उस उपवास से समस्या का हल नहीं होगा। आहार संयम से अन्न की समस्या का हल भी निकाला जा सकता है और स्वास्थ्य को भी कायम रख सकते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने राजा के फर्ज की चर्चा करते हुए कहा कि सज्जनों की रक्षा करना राजा का पहला फर्ज है। दूसरा फर्ज दुर्जनों पर अनुशासन करना, कड़ाई करना और नियंत्रण करना है। जिस राज्य में दोषी को दंड नहीं मिलता और निर्दोष को दंड दिया जाता है वहां सज्जनों का जीना हराम हो जाता है। दंड नीति प्रागेतिहासिक है। इस नीति का कुशलता, विवेक के साथ प्रयोग करने वाला ही सफल शासक बन सकता है। उन्होंने आश्रितों, प्रजा का भरण पोषण करने को राजा का तीसरा फर्ज बताते हुए कहा कि जो अपनी प्रजा की रक्षा न कर सके, भरण पोषण न कर सके वह राजा कहलाने की योग्यता खो देता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने विद्यार्थी वर्ग को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि विद्यार्थी को अति राग भाव से बचना चाहिए। अगर वह भोग विलास, राग भाव में फंस जाता है तो विद्यार्जन में बाधाएं झेलनी पड़ती है। भोग पर योग का, राग पर विराग का अंकुश होना चाहिए। कोरा भोग रोग को आमंत्रित करने वाला होता है।

17 घंटे तैनात रहते हैं स्वयं सेवक

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों को व्यवस्थित दर्शन लाभ मिले इस उद्देश्य को लेकर आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अन्तर्गत स्वयं सेवक 24 घंटे में 17 घंटों तक तैनात रहते हैं। प्रातः 5 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक अपने क्रम के अनुसार स्वयं सेवक अपूर्व उत्साह के साथ अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इस व्यवस्था के संयोजक मनोज पारख के नेतृत्व में स्वयं सेवकों ने आचार्य महाप्रज्ञ के पड़िहारा पधारने के साथ ही अपने आपको व्यवस्था में नियोजित कर दिया था। सह संयोजक तेजकरण चौरड़िया, चन्द्र पुगलिया, जगदीशराम मालू सहित स्वयं सेवकों के 7 दल भोजन व्यवस्था, रास्ता व्यवस्था, पण्डाल व्यवस्था, आवास व्यवस्था, गौचरी व्यवस्था में अपूर्व सहयोग दे रहे हैं। श्रीदूँगरगढ़ की इस सुन्दर व्यवस्था ने सबके मन को जीता है।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक / सहसंयोजक